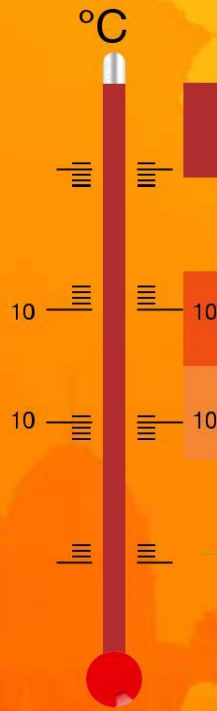


फरवरी, 2019



संवाद आपदा

वर्ष 2019
में लू
से
निपटने
की तैयारी



2 खबरों
में

4 डीआरएम पर
आईओआरए की बैठक

9 आईडब्ल्यूडीआरआई
2019

सीबीआरएन आपातस्थितियों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम



एनडीएमए ने 11-15, फरवरी, 2019 के दौरान मंगलुरु में न्यू मंगलुरु पोर्ट ट्रस्ट में एक पांच दिवसीय बुनियादी सीबीआरएन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य समुद्री पत्तनों (सीपोर्ट) पर सीबीआरएन आपातस्थितियों से निपटने के लिए समुद्री पत्तन आपातस्थिति प्रबंधन (सीपोर्ट) इमर्जेंसी हैंडलर्स-एसईएच तैयारी को और बेहतर बनाना था।

यह कार्यक्रम ऐसे कार्यक्रमों की श्रृंखला में पहला कार्यक्रम था जिसे देश के विभिन्न समुद्री पत्तनों पर आयोजित किया जाएगा ताकि एसईएच विशिष्ट मोचन टीमों के पहुंचने तक आपातस्थितियों के प्रति उचित ढंग से कार्रवाई करने में सक्षम हो जाएं।

सीबीआरएन आपातस्थितियों का संबंध रासायनिक, जैविक, विकिरणकीय तथा नाभिकीय सामग्री के उपयोग से उत्पन्न खतरों से है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन भारतीय पत्तन संघ (आईपीए), नाभिकीय औषधि एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास) तथा राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) के सहयोग से आयोजित किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य किसी सीबीआरएन आपातस्थिति को संभालने में एसईएच को सक्षम बनाकर हमारे समुद्री पत्तनों पर सीबीआरएन सुरक्षा को बेहतर बनाना था।

कार्यक्रम में वैयक्तिक सुरक्षा उपकरण (पीपीई) के इस्तेमान समेत जांच तथा विसंदूषण के सजीव प्रदर्शनों के साथ व्याख्यान और फील्ड प्रशिक्षण शामिल था। सीबीआरएन आपातस्थितियों से निपटने के लिए एसईएच को उपकरणों से लैस करने के अलावा प्रशिक्षण कार्यक्रम ने भागीदारों को चिकित्सा की प्राथमिक सहायता और प्रारंभिक मनोसामाजिक सहायता प्रदान करने के लिए भागीदारों को सक्षम बनाना भी था।

भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (बीएआरसी) तथा रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन (डीआरडीओ) जैसे हितधारक विभागों के विशेषज्ञों ने भागीदारों को प्रशिक्षित किया।

समुद्री पत्तन के प्रचालन तथा रखरखाव के लिए जिम्मेदार विविध एजेंसियों को दर्शाने वाले लगभग 50 भागीदारों को सीबीआरएन आपातस्थितियों के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षण दिया गया। कार्यकारी स्तरीय 150 कर्मचारियों को एक आधा दिन के मॉड्यूल में विषय पर सुग्राहीकृत किया गया।

एनडीएमएस प्रायोगिक परियोजना पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

एनडीएमए ने राष्ट्र आपदा प्रबंधन सेवा (एनडीएमएस) से संबंधित उपकरणों के संचालन के लिए राज्य/जिला कार्मिकों को उनसे परिचित कराने और उसके लिए समर्थ बनाने हेतु एक दो-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का 25-26 फरवरी, 2019 के दौरान आयोजन किया। राज्य/जिला आपातकालीन प्रचालन केंद्र (एसईओसी/डीईओसी) में कार्य अनुभव वाले मध्यम-स्तरीय अधिकारियों को अन्य सहित उन्नत प्रायोगिकी जैसे अति-लघु अपर्चर टर्मिनल (वीसेट), वाइस कॉल्स, इंटरनेट, ई-मेल, वीडियो, सेटेलाइट फोन तथा उच्च आवृत्ति रेडियो का इस्तेमाल करके प्रशिक्षित किया गया।

एनडीएमएस गृह मंत्रालय, एनडीएमए, राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ), सभी राज्यों तथा संघ राज्य क्षेत्रों के 81 खतरा-प्रवण जिलों के मुख्यालयों के नियंत्रण कक्ष को जोड़ने के लिए एक प्रायोगिक परियोजना है। इसका लक्ष्य किसी आपदा के मामले में ईओसी के लिए विफलता रहित संचार आधारवांचा तथा तकनीकी सहायता उपलब्ध कराना है।



आईआरएस पर व्याख्यान (लेक्चर)



एनडीएम ने क्रमशः 09 जनवरी, 11 जनवरी तथा 17 जनवरी, 2019 को गोवा, महाराष्ट्र तथा कर्नाटक में सरकारी अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए घटना मोचन प्रणाली (आईआरएस) पर लेक्चरों की एक श्रृंखला का आयोजन किया।

आईआरएस किसी घटना से व्यवस्थित रूप में निपटने के लिए एक कारगर तंत्र है। हर हितधारक को भूमिकाओं तथा जिम्मेदारियों का स्पष्ट वितरण करके, यह सिस्टम किसी आपदा के प्रति मोचन कार्य करते समय भ्रम तथा अराजकता की स्थिति को दूर करता है।

आईआरएस स्पष्ट रूप से उन तत्काल कार्यों का वर्णन करता है जिन्हें एक बार आपदा के द्वारा प्रहार किए जाने के बाद किए जाने की जरूरत होती है। यह सिस्टम राज्य से ब्लॉक स्तर तक, एक विशिष्ट आपदा के मामले में विशिष्ट भूमिकाओं को करने के लिए अधिकारियों की पहचान, पदनामित तथा प्रशिक्षण देने का वर्णन करता है। हर हितधारक अपनी भूमिका के प्रति जागरूक बनाया जाता है और आपदा के मामले में सक्रिय हो जाता है। यह एक अति-जटिल मोचन तंत्र का महत्वपूर्ण विश्लेषण करता है जिसके कारण एक तीव्र तथा सुचारु मोचन प्रक्रिया होती है।

यह एक भागीदारीपूर्ण दृष्टिकोण होता है जिसे भारत में किसी आपदा के आकार, स्थल, किस्म तथा जटिलता के निरपेक्ष सफलतापूर्वक क्रियान्वित करा जा सकता है। यह दृष्टिकोण एनडीएम को आपदाओं की मॉनीटरिंग द्वारा उससे निपटने के लिए राज्यों की तैयारी का आंकलन करने तथा उसे बेहतर बनाने और एक एकीकृत कमान के साथ बहु-एजेंसी समन्वय हासिल करने और क्षमता निर्माण और मोचन तंत्रों को बेहतर बनाने में मार्गदर्शन देने में मदद भी करता है।

समुत्थानशील पुनर्बहाली के त्वरित आंकलन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

समुत्थानशील पुनर्बहाली के त्वरित आंकलन पर एक चार-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का 29 जनवरी, 2019 को गांधीनगर, गुजरात में सार्क आपदा प्रबंधन केंद्र (अंतरिम इकाई) द्वारा आयोजन किया गया। एनडीएम के प्रतिनिधि ने इस कार्यक्रम में एक संसाधन उपलब्धकर्ता के रूप में भाग लिया।

पुनः बेहतर निर्माण के तौर-तरीके के अनुपालन करने के बाद आपदा पश्चात् पुनर्बहाली तथा पुनर्निर्माण आपदाओं के प्रति समुत्थानशीलता कायम रखने में सार्क सदस्य राज्यों के लिए महत्वपूर्ण है। समय पर पुनर्बहाली तथा पुनर्निर्माण के लिए एक शीघ्र तथा विश्वसनीय आपदा पश्चात् प्रभाव आंकलन किया जाना मुख्य बात है।

प्रशिक्षित कार्यक्रम में आपातकालीन मोचन, पुनर्बहाली तथा पुनर्निर्माण गतिविधियों के बारे में सीखने तथा उनके बारे में जानकारी बढ़ाने के लिए और बेहतर पुनर्बहाली तथा पुनर्निर्माण के लिए चुस्त-दुरुस्त उपकरणों और तकनीकों के इस्तेमाल को बढ़ावा देने के काम में भागीदारों को मदद दी।



सभी आठ सार्क (दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ) राष्ट्रों से आए प्रतिनिधियों में प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया

औद्योगिक आपदा जोखिमों पर व्याख्यान

एनडीएम ने 30 जनवरी, 2019 को नई दिल्ली में गेल पर 'रासायनिक औद्योगिक आपदा जोखिम-निवारक उपाय तथा मोचन' पर एक सत्र का आयोजन किया। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. डी.एन. शर्मा, सदस्य, एनडीएम ने की। •



आपदा जोखिम प्रबंधन पर आईओआरए की बैठक



भारतीय महासागर क्षेत्र को कभी-कभी 'विश्व खतरा पट्टी-वर्ल्ड हजार्ड बैल्ट' भी कहा जाता है क्योंकि संसार की दस में से आठ आपदाएं यहां घटित होती हैं जिसके कारण संसार की लगभग एक तिहाई आबादी आपदाओं से असुरक्षित हो जाती है।

वर्ष 2018 में इंडोनेशिया को सुनामी तथा भूकंपों का सामना करना पड़ा, मडागास्कर में भयंकर सूखे पड़े, भारत में हिंद महासागर के द्वीपों में मौसमी चक्रवातों के अलावा बाढ़ तथा भूस्खलन आए और कई और हादसे हुए। जिंदगियों की हानि के साथ-साथ संपत्ति तथा प्राकृतिक पर्यावरण को हुए नुकसान का हिसाब नहीं लगाया जा सकता। इसके अलावा हिंद महासागर से जुड़े क्षेत्र में लघु द्वीपीय राष्ट्र राज्यों और अधिक आबादी वाले विकासशील समुद्र तट पर बसे देशों का घर है जहां पर एक आपदा से निपटने के लिए आवश्यक संसाधनों तथा परिसंपत्तियों के अभाव के कारण आपदाओं के अत्यधिक प्रहार होते हैं।

इसके अलावा इस क्षेत्र में बढ़ते समुद्र स्तरों तथा बढ़ते जल-तापमानों के साथ जलवायु परिवर्तन की वजह से आपदाओं के वृद्धि होना भी देखा जा रहा है। इसलिए आपदा जोखिम प्रबंधन (डीआरएम) हिंद महासागर रिम असोसिएशन (आईओआरए) देशों का एक प्राथमिकतापूर्ण विषय है। वास्तव में आईओआरए कार्य-योजना (2017-2021) क्षेत्र में आपदा से लड़ने की क्षमता को बेहतर बनाने के विशेष लक्ष्य रखती है। इस दिशा में, यह कार्य-योजना संयुक्त प्रशिक्षण कार्यक्रमों, अनुभवों तथा बेहतरीन प्रथाओं को साझा करने के लिए, क्षमता निर्माण तथा क्षेत्र के अंदर तकनीकी क्षमताओं को बढ़ाकर इस

प्राथमिकता वाले क्षेत्र को मजबूती देने के लिए सरकारों और संस्थानों के बीच भागीदारियों को बढ़ावा देती हैं।

डीआरएम पर आईओआरए क्लस्टर ग्रुप की एक ऐसी बैठक का विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा एनडीएमए, राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) और गृह मंत्रालय के सहयोग से 5-6 फरवरी, 2019 के दौरान आयोजन किया गया।

इस दो-दिवसीय बैठक में आईओआरए में डीआरएम के लिए एक मसौदा कार्य-योजना को तैयार करने पर फोकस के साथ विचार-विमर्श वाले सत्रों का आयोजन किया गया। इस बैठक में कार्य-योजना के अंतर्गत सहमत उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए एक डीआरएम कोर ग्रुप गठित करने की जरूरत पर भी विचार विमर्श हुआ।

आपदा मोचन
में सहयोग देने के काम
को मजबूत करने पर
चर्चाएं
की गईं

8 सदस्य राज्यों
से 36 प्रतिनिधियों
ने इस बैठक
में भाग लिया

आपदा मोचन से जुड़े मामलों जिसमें प्रभावित देशों में मोचन टीमों की तैनाती और राहत सामग्री का एकत्रण-कार्य शामिल है, में सहयोग को मजबूत करने के काम पर परिचर्चाओं का आयोजन किया गया। इसके अलावा सूचना विनिमय, बेहतरीन प्रथाओं को साझा करने, आंकड़ों तथा पूर्व चेतावनी प्रौद्योगिकियों पर चर्चा की गई।

08 सदस्य देशों के कुल 36 प्रतिनिधियों और आईओआरए सचिवालय ने इस बैठक में भाग लिया। गृह मंत्रालय, विदेश मंत्रालय, एनडीएमए और एनडीआरएफ के वरिष्ठ अधिकारी बैठक में उपस्थित थे।

आईओआरए कार्ययोजना के लक्ष्य (2017-2021)

- अन्य अंतर-सरकारी तथा बहु-पक्षीय संगठनों के साथ सहयोग को बढ़ाना।
- सूचना, विशेषज्ञता, बेहतरीन प्रथाओं को साझा करना।
- प्रशिक्षण तथा क्षमता निर्माण कार्यक्रमों को लागू करना।
- पूर्व चेतावनी प्रणालियों तथा क्षेत्रीय अभ्यासों के माध्यमों से समुत्थानशीलता विकसित करना।

वर्ष 2019 में लू से निपटने के लिए तैयारी



वर्ष 2015 में भारत में, लू के कारण जाने वाली जिन्दगियों की संख्या 2,040 रही थी। यह संख्या किसी अन्य आपदा के कारण होने वाली मौतों से अधिक थी। 2018 में लू के कारण होने वाली मौतों की संख्या सिर्फ 25 रही इस प्रकार केवल 3 वर्षों की समयावधि में मौतों की संख्या में 98 प्रतिशत से अधिक कमी दर्ज की गई यह निश्चित रूप से सफलता की एक कहानी है।

यह कैसे होगा ? घातक लू के कहर को देखते हुए, राष्ट्रीय आपदा प्राधिकरण में वर्ष 2016 में 'लू पर कार्य-योजना की रोकथाम तथा प्रबंधन' पर तैयारी किए तथा राज्यों को परिचालित किए। इन दिशानिर्देशों में प्रचंड लू के प्रतिकूल प्रभावों को कम करने के लिए स्थानीय प्राधिकरणों द्वारा किए गए कार्य-कलापों के कार्यान्वयक, समन्वयन तथा मूल्यांकन के लिए एक रूपरेखा उपलब्ध कराई गई। सबसे बुरी तरह प्रभावित कुछ राज्यों द्वारा दिशानिर्देशों के कारगर कार्यान्वयन से वर्ष 2016 में लू से होने वाली संख्या घटकर 1111 रह गई।

*लू सामान्य अधिकतम तापमान से अधिक
असामान्य उच्च तापमानों की एक
अवधि होती है जो मानसून पूर्व गर्मी के मौसम के*

*दौरान चला करती है। प्रचंड
तापमान तथा उसके कारण होने वाली
वातावरण की स्थितियां प्रतिकूल रूप
से लू के हालात झेल रहे क्षेत्रों में रहने
वाले लोगों पर असर डालती हैं क्योंकि
इससे शरीर में पानी की कमी गर्मी के
कारण थकान, शारीरिक तनाव तथा
कभी-कभी मौत भी हो सकती है।*

इस अनुभव ने हमें यह बताया कि अगर आपदा से संबंधित सभी प्रमुख हितधारकों के सहित एक अधिक उन्नत योजना के साथ हम और भी अच्छा कर सकते हैं। जब मार्च महीने के उत्तरार्द्ध में सामान्य

रूप से देश के विभिन्न भागों में लू का कहर पड़ना शुरू होता है, उससे पहले ही एनडीएम ने फरवरी के महीने में तेलंगाना में हैदराबाद में लू के जोखिम की कमी पर एक राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया। इस सामयिक कार्यशाला ने वर्ष के लिए लू प्रवण राज्यों को अपनी योजनाएं तैयार करने में सहायता की और हम मौतों की संख्या को कम करके 384 पर ला सके।

वर्ष 2018 में, एनडीएम ने दूसरी वार्षिक लू संबंधी तैयारी की कार्यशाला का विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश में आयोजन किया।

वर्ष 2019 में 'शून्य मृत्यु' के लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में लू से निपटने की हमारी तैयारी को और बेहतर बनाने के लिए, एनडीएम ने महाराष्ट्र सरकार के सहयोग से नागपुर में 27-28 फरवरी, 2019 के दौरान लू जोखिम न्यूनीकरण पर एक दो-दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया।

राज्यों को विशेष लू से जुड़ी योजनाओं को अपडेट तथा लागू करने की आवश्यकता के बारे में राज्यों को संवेदीकृत करने के अलावा, इस कार्यशाला ने नए फोकस क्षेत्रों जैसे जलवायु परिवर्तन अनुकूलन (सीसीए) पर भी चर्चा की।

जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान के अधिक बढ़ने के साथ-साथ लू की आवृत्ति तथा घातकता में बढ़ोतरी हो रही है। जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पेनल (आईपीसीसी) द्वारा जारी एक हालिया रिपोर्ट दर्शाती है कि भारतीय उप महाद्वीप में वैश्विक तापन (ग्लोबल वार्मिंग) का असर जल्दी हुआ है और पूर्वानुमान से अधिक रूप में हुआ है।

तकनीकी सत्र

- जलवायु परिवर्तन तथा लू जोखिम न्यूनीकरण
- लू हेतु पूर्व चेतावनी, पूर्वानुमान तथा तैयारी
- लू प्रशमन उपायों के लिए अनुभव साझा करना एवं सीखे गए सबक
- लू से बचने के लिए क्षमता निर्माण और कारगर मोचन क्षमता को बढ़ावा देना
- अंतर-अभिकरण समन्वय तथा कारगर प्रशासन

सभी हितधारकों से अपने जोखिम न्यूनीकरण योजना में जलवायु परिवर्तन अनुकूलन (सीसीए) को शामिल करने का आग्रह करते हुए, लेफ्टिनेंट जनरल एन.सी. मरवाह, सदस्य, एनडीएमए ने कहा, 'आखिरी कुछ सालों में जलवायु परिवर्तन का आविर्भाव सुस्पष्ट है। मध्यावधि तथा दीर्घावधि उपायों पर अधिक जोर दिए जाने की जरूरत है जिन्हें जलवायु परिवर्तन अनुकूलन के लिए अपनाया जाने आवश्यक है।

कुछ अधिकांश असुरक्षित राज्य, जिन्होंने लू के प्रभाव के प्रशमन में सराहनीय कार्य किया है, ने अपने अनुभवों तथा सर्वोत्तम प्रथाओं को भी साझा किया। डॉ० डी.एन. शर्मा, सदस्य, एनडीएमए जिन्होंने अनुभव साझा करने तथा सीखे गए सबकों पर सत्र की अध्यक्षता की, ने कहा, 'किसी आपदा से निपटने के लिए एक दूसरे से सीखना सबसे अच्छा तरीका है'।

दो दिनों तक, हितधारकों ने अग्रिम योजना तथा तैयारी के साथ लू के प्रतिकूल प्रभावों को और कम करने के लिए कार्ययोजना पर चर्चा की। भारत मौसम विज्ञान विभाग ने इस वर्ष गर्मी के मौसम में सामान्य से ऊपर तापमान रहने की संभावना का संकेत दिया है। जैसे-जैसे तापमान बढ़ना शुरू हुआ और कड़ी तथा लंबी अवधि वाली लू की हवाएं चलेंगी, हमें इससे तैयार रहने में मदद मिलेगी।

लू के आघात से पीड़ित किसी व्यक्ति के इलाज के लिए सुझाव (टिप्स) :

अब से कुछ सप्ताह बाद, सूरज अपनी पूरी ताकत के साथ आग उगलना शुरू करेगा और हमें अपनी धूप से झुलसाएगा। सभी सावधानियों के बावजूद, लोग शरीर में पानी की कमी, थकान, तनाव और लू लगने से प्रभावित होंगे। यहां यह सुझाव दिए जाते हैं कि आप किस प्रकार लोगों की मदद कर सकते हैं :

- शरीर का तापमान कम करने के लिए पीड़ित के सिर पर गीले कपड़े की पट्टी रखें/पानी उड़ें
- लोगों को ओआरएस (जीवन रक्षक घोल) या नींबू शर्बत/तौरानी या जो भी शरीर में पानी की पूर्ति के लिए जरूरी हो, पीने के लिए दें
- पीड़ित व्यक्ति को तुरंत पास के स्वास्थ्य केंद्र में ले जाएं
- यदि गर्मी में अगर लगातार शरीर का उच्च तापमान, भयंकर सिर दर्द, सिर चकराना, कमजोरी, जी मचलना और बेचैनी की हालत महसूस करते हों तो 108 नंबर पर कॉल करें/एंबुलेंस बुलाएं

किसने क्या कहा



“सामाजिक पर्यावरणों की बारीकियों में स्थानीय समस्याओं के कारकों के लिए स्थानीय समाधानों के साथ नवाचार की आवश्यकता है। इसलिए यह समय लू से निपटने के लिए योजनाओं को और बेहतर बनाने तथा इनके क्रियान्वयन के स्तर को और उन्नत करने का भी है।”

लेफ्टिनेंट जनरल एन.सी. मरवाह, सदस्य, एनडीएमए

“किसी आपदा से निपटने के लिए एक-दूसरे से सीखना सबसे अच्छा तरीका है। लू जोखिम न्यूनीकरण पर अनुभवों को साझा करने से हमें अपनी तैयारी को और बेहतर करने में मदद मिलेगी।”

डॉ० डी.एन. शर्मा, सदस्य, एनडीएमए



“राष्ट्रीय, राज्य तथा जिला स्तरों पर एक उचित मॉनीटरिंग तंत्र स्थापित करके रखने और सशक्त आंकड़ों को संग्रहित करने की एक आवश्यकता होती है। हमारा लक्ष्य न केवल लू से कोई भी मृत्यु न होने देने तथा बीमारी को कम करने का है बल्कि लू जोखिम न्यूनीकरण का भी है।”

डॉ० वी.तिरुपुगल, संयुक्त सचिव, एनडीएमए

“हमें लू से जुड़ी मौतों तथा बिमारियों पर एक ठोस मामला-आधारित आंकड़ों का रखरखाव किए जाने की जरूरत है। इससे मौतों और बिमारियों की संख्या में कमी लाने के लिए सटीक हस्तक्षेपों की योजना बनाने में मदद मिलती है।”

डॉ० प्रदीप खासनोबिस, संयुक्त निदेशक, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय



“हमें अपनी संपूर्ण दृष्टिकोण को बहु-क्षेत्रीय बनाने की जरूरत है ताकि संपूर्ण समाज तक लाभ पहुंच जाएं। शुरुआत से काम करने की बजाए अन्य लोगों की सहायता से सीखने और स्थानीय जरूरतों के हिसाब से योजनाओं का अनुकूलन करने की भी जरूरत है।”

डॉ० दिलीप मावलंकर, भारतीय जन स्वास्थ्य संस्थान, गांधी नगर

“प्रशमन उपायों को उचित प्रकार से तय किए जाने की जरूरत है क्योंकि इनके लिए प्रत्येक हस्तक्षेप का व्यवहार अलग क्षेत्र में अलग होता है। उदाहरण के लिए अधिक पेड़ों का होना कम सघनता वाले क्षेत्रों में एक बड़ा असर छोड़ता है जबकि टंडी छतें उच्च घनत्व वाले क्षेत्रों में अच्छा काम करती है।”

डॉ० राजश्री कोटारकर, प्रोफेसर, विश्ववरिड्या राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान

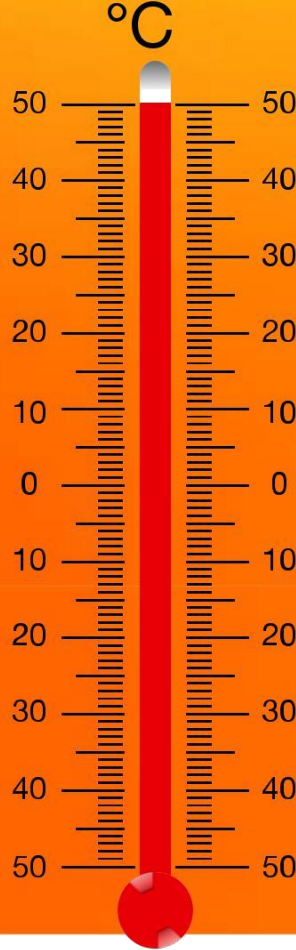


“जन-विशिष्ट संवदेनशीलताओं को बेहतर ढंग से समझने के लिए अधिक मात्रात्मक अनुसंधान जरूरी है।”

डॉ० लिपिका नंदा, भारतीय जन स्वास्थ्य फाउंडेशन, हैदराबाद



क्या आप लू का सामना करने के लिए तैयार हैं ?



एक गर्म लहर (लू) के हमले को रोकना संभव नहीं हो सकता है लेकिन इसके असर को कम करना बहुत अच्छी तरह से संभव है। आप और आपके परिवार को लू से बचाने के लिए कुछ सरल तथा कारगर उपाय यहां नीचे दिए जा रहे हैं :

- हल्का खाओ, सही खाओ : घर का ताजा पका हुआ, कम तेल वाला भोजन करें। भोजन में अधिक सब्जियां तथा फलों का उपयोग करें। चाय, कॉफी तथा अलकोहल से दूर रहें। पर्याप्त मात्रा में पानी पीना और अन्य तरल पदार्थ जैसे नींबू पानी, तौरानी, लस्सी का सेवन करें ताकि आपके शरीर में पानी की भरपूर मात्रा रहे।
- घरों की छत पर सफेद रंग/पेंट कराएं : ऐसा करने से छतें अधिक धूप का परावर्तन करेगी और कम गर्मी सोखेंगी इस प्रकार आपके घर पर पड़ने वाली धूप/गर्मी की मात्रा को घटाएगी।
- एक रसोई बगिया (किचन गार्डन) : अपने घर की छत पर या पिछवाड़े में किचन गार्डन बनाएं—ताकि आपके घर के साथ के अलावा आस-पास की जगह भी ठंडी हो सके—हरी सब्जियां उगाएं; आपके दीवारों पर लगी हुई यह बेलें आपको घर की राहत की सांस पहुंचाएंगी।
- ऊर्ध्वाधर बघिया/वर्टिकल गार्डन तैयारी करना : ये आंखों को सुकूल देते हैं, प्रदूषण को कम करते हैं और गर्मी के स्तरों को भी कम करते हैं। ज्यादा-से-ज्यादा ऐसे बागों को लगाने का प्रयास करें।
- पर्याप्त हवादार वातावरण (क्रॉस वेंटिलेट) की व्यवस्था : अपनी खिड़कियों, खास-तौर पर जो एक-दूसरे के सामने बनी हों, को सुबह के दौरान तथा देर शाम के दौरान खुला रखें, जब हवा तुलनात्मक रूप से ठंडी होती है।
- बिजली बल्बों/ट्यूबलाइटों आदि का उचित प्रकार से उपयोग करें : इनको तब बंद कर दें जब इनका उपयोग न हो रहा हो—चालू हालत में इनसे गर्मी निकलती है और बिजली का बिल भी बढ़ता है।

आपदा समुत्थानशील आधारढांचा
पर दूसरी अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला

IWDRI 2019

आपदा समुत्थानशील आधारढांचा में निवेश सेंडाई रूपरेखा में सभी नुकसान कम करने के तय किए गए लक्ष्यों को हासिल करने के लिए अनिवार्य है। पिछले दो सालों से, भारत जी 20 शिखर सम्मेलनों और आपदा जोखिम न्यूनीकरण पर एशियाई मंत्रालयीन सम्मेलन (एएमसीडीआरआर) समेत विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर 'आपदा समुत्थानशील आधारढांचा गठबंधन' के

आपदा जोखिम प्रबंधन एजेंसियों, प्रमुख आधारढांचा क्षेत्रों, बहु-पक्षीय विकास बैंकों, संयुक्त राष्ट्र एजेंसियों, अकादमिक, वैज्ञानिक संस्थानों, निजी क्षेत्र तथा नीतिगत थिंक टैंकों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे।

आईडब्ल्यूडीआरआई 2019 एक अंतर-देशीय ज्ञान भागीदारी को आधारढांचा के आपदा समुत्थानशीलता निर्माण के एक कारगर साधन के रूप



लिए वकालत करता रहा है। सीडीआरआई को एक अंतर-देशीय ज्ञान विनियम तथा क्षमता विकास भागीदारी के रूप में कल्पित किया गया है।

जनवरी, 2018 में, आपदा समुत्थानशील आधारढांचा पर पहली अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला (आईडब्ल्यूडीआरआई-2018) का नई दिल्ली में आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में महत्वपूर्ण आधारढांचा क्षेत्रों (ऊर्जा, परिवहन, दूरसंचार, और जल) की समुत्थानशीलता निर्मित करने के लिए सशक्त विचारों को खोजने के लिए 21 देशों तथा संबद्ध हितधारकों को एक मंच पर इकट्ठा किया। इसमें 'प्रणालियों की प्रणाली के बारे में सोचना, एक वैश्विक आधारढांचा मालसूची का निर्माण, एक क्षेत्रीय प्रथा नियमावली और नीतिगत प्रावधानों के अनुकूलकरण पर परिचर्चाएं शामिल थी।

इस पर और काम करने के लिए, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए) ने संयुक्त राष्ट्र आपदा जोखिम न्यूनीकरण कार्यालय (यूपनआईएसडीआर) के सहयोग से नई दिल्ली में 19-20 मार्च, 2019 को 'आपदा समुत्थानशील आधारढांचा' पर दूसरी अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन कर रहा है।

कार्यशाला में भागीदार देशों से प्रतिनिधि शामिल होंगे जो अपनी

में बनने के लिए जरूरी रूपरेखा पर विचार करेगी। अन्य बातों के साथ-साथ, यह कार्यशाला भागीदार देशों द्वारा उनकी आधारढांचा परिसंपत्तियों, ज्ञान विनियम को सुकर बनाने के लिए आंकड़ा मानकीकरण को अपडेट करने के लिए क्षमता विकास हेतु ठोस कार्ययोजनाओं पर भी विचार करेगी।

आईडब्ल्यूडीआरआई-2019 के उद्देश्य निम्नानुसार हैं :-

- प्रमुख आधारढांचा क्षेत्रों (परिवहन, ऊर्जा, दूरसंचार तथा जल) में आपदा जोखिम प्रबंधन की अच्छी प्रथाओं को पहचानना।
- डीआरआई पर सहयोग से किए गए अनुसंधान के लिए विशेष क्षेत्रों तथा मार्गों की पहचान करना।
- अगले तीन सालों के लिए सीडीआरआई के साथ-साथ एक सांकेतिक रोल-आउट प्लान की व्यापक रूपरेखा पर चर्चा तथा सह-निर्माण का कार्य।
- साझा हित वाले क्षेत्रों पर काम करने के लिए सदस्यों के लिए एक मंच तैयार करना और विशिष्ट प्रतिबद्धताओं को करना।

अधिक जानकारी के लिए, कृपया कार्यशाला की भिन्न वेबसाइट को देखें : <https://resilientinfra.org/iwdri/>

AVALANCHE PREPARE, BE AWARE, STAY SAFE.

हिमस्खलन – क्या करें तथा क्या न करें

- सपाट स्थान (सख्त बर्फीली सहत वाले टुकड़े) पर रुके रहने का प्रयास करें।
- किसी भी उपकरण को शरीर से दूर हटा दें ताकि आपको चोट न लगे।
- शरण लें—उदाहरण के लिए किसी सुरक्षित चट्टान या पेड़ के नीचे शरण लें और मजबूती से उसे पकड़ें रहें।
- यदि आपको शरण मिल गई हो, तो नीचे की ओर झुक जाएं और आपका मुंह बर्फ गिरने वाले स्थान से विपरीत दिशा में हो।
- नाक और मुंह को ढक लें—रुमाल का इस्तेमाल दम घुटने से बचाता है।
- हाथों को अपने चेहरे के आगे कर लें ताकि हवा के लिए जगह बनी रहे।
- बर्फ की सतह की दिशा में झटका दें—यह बचाने वालों के लिए एक निशान (मार्कर) के रूप में काम करेगा।
- एक बार हिमस्खलन रुक जाए तो खुदाई शुरू कर दें—देर करने से बर्फ को जमने का अवसर मिल जाएगा।
- उस जगह पर चिह्न (मार्क) लगा कर रखें जहां पर अन्य टीम सदस्य अंतिम बार देखे गए—किसी कपड़ा, कोई छोटा खंभा, या कोई भी चीज उस स्थान पर निशानी के लिए लगा दें।
- कार का इंजन बंद कर दें।
- बीड़ी, सिगरेट न पीएं अथवा लाइटर या माचिस का उपयोग न करें—ऐसा करने से ऑक्सीजन का उपभोग होता है।
- यदि उपलब्ध हो तो टू-वे रेडियो चालू हालत में रखें।

हिमस्खलन के संकेत

- तेज ढलान वाली चट्टानें—25 और 45 डिग्री के बीच ढलान वाली।
- उत्तल ढलानें—कनवैक्स स्लोप्स (चम्मच के आकार की) सबसे अधिक खतरनाक होती है। विशेष रूप से दिसंबर के उत्तरार्ध और जनवरी के अंतिम हिस्से में।
- उत्तर—मुखी ढलानें सर्दी के बीच के समय में हिमस्खलनों से सर्वाधिक प्रभावित होती है। दक्षिण—मुखी ढलानें धूप वाले बसंत के मौसम के दिनों में गर्म लापमान में भी हिमस्खलन से असुरक्षित रहती हैं।
- चिकनी, घासदार ढलानें, चट्टानें, पेड़ों तथा भारी पत्ते-बूटों वाले इलाकों की तुलना में अधिक खतरनाक होते हैं जहां बर्फ को जमने के लिए सहारा मिलता है।
- नई/ताजी बर्फ सबसे अधिक खतरनाक होती है।
- तेज बर्फ का जमना एक अच्छा संकेत है—टूटी फूटी, सूखी बर्फ तेजी से फिसलती है।
- टूटी-फूटी, नीचे दबी हुई बर्फ जमी हुई बर्फ की तुलना में सबसे अधिक खतरनाक होती है, इसलिए जांच करने के लिए एक स्की-स्टिक का उपयोग करें।
- कम तापमान बर्फ की अस्थिरता को बढ़ा देता है जबकि अचानक तापमान में वृद्धि से घीली बर्फ फिसलना शुरू करती है।



पता:

राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए)

ए-1, सफदरजंग एनक्लेव, नई दिल्ली-110029.

दूरभाष संख्या : +91-11-26701700

नियंत्रण कक्ष : +91-11-26701728

हैल्पलाइन संख्या : 011-1078

फैक्स : +91-11-26701729